।। श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ।।

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।
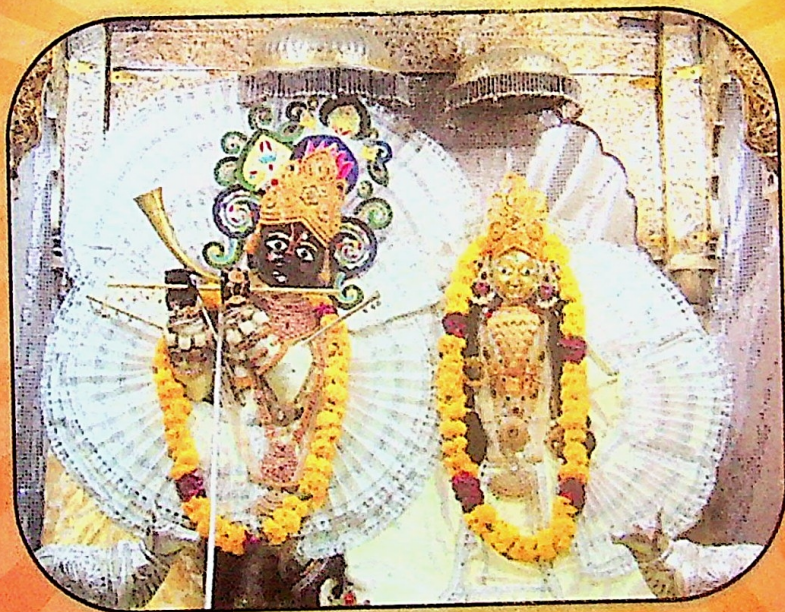
श्रीस्तवोपासना

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज

राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति श्री प्रवण मुखर्जी से

राष्ट्रपति सम्मान ग्रहण करते हुए श्री ''श्रीजी'' महाराज

*   श्रीसर्वेश्वरो जयति   *

।।   श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः   ।।

श्रीस्तवोपासना

प्रणेताः--

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री ''श्रीजी'' महाराज

प्रकाशक--

विद्वत्परिषद्

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ

सलेमाबाद, पुष्करक्षेत्र, किशनगढ जि. अजमेर (राज०)

मिति चैत्र शुक्ल ४ सोमवार वि. सं. २०७२

दिनांक २३/३/२०१५ ई.

।। श्रीसर्वेश्वरो जयति ।।

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

समर्पणम्

राधामाधवपादाब्जे सर्वमङ्गलसम्प्रदा।
सश्रद्धमर्प्यते भक्त्या श्रीस्तवोपासना हृदा।।

शुभमिति-चैत्र शु. ४ सोमवार
वि. सं. २०७२ दिनांक २३/३/२०१५

समर्पकः-

श्रीराधामाधवपदकञ्जपरागकामः-
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यः

श्रीस्तवोपासना की उपासना

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज की श्रीराधामाधव युगलोपासना से पवित्र सहज काव्य प्रतिभा की अजस्रधारा में अभिनव ''स्तवोपासना'' रूप ''अष्टकत्रयी'' प्रस्फुटित हुई है। महाराजश्री ने वैदिक परम्परा में स्वीकृत 'तदेकम्' तथा 'राधया माधवो देवो माधवेन च राधिका विभ्राजन्ते जनेष्वा' (ऋक् परिशिष्ट) सिद्धान्त को अपनी अमृतमयी वाणी से सम्पन्न किया है। सृष्टि के विषय में वेद की अवधारणा है कि यह जगत् अग्नि और सोमतत्त्व से बना है। 'राधा' नाम से इन्हीं दो तत्त्वों की ओर संकेत है। 'रा' अग्नितत्त्व का वाचक है तथा 'धा' अग्नि को परिपुष्ट करने वाला आहुति रूप सोमतत्त्व है। जिस प्रकार वटवृक्ष के बीज में वट का तना, शाखाएँ, पल्लव आदि अप्रकट अवस्था में विद्यमान रहते हैं वैसे ही 'राधा' तत्त्व में यह जगत् विद्यमान रहता है यह एक ही दिव्य ज्योति रूप तत्त्व अपने को द्विदल के समान 'राधा-माधव' रूप में प्रकट करता है। प्रकट अवस्था के राधा और माधव का अव्यक्त रूप 'श्री' है। यह श्रीतत्त्व ही युगल स्वरूप में प्रकट होता है। इस रहस्य को राधा-माधव के पूर्व में 'श्री' शब्द प्रयुक्त करके प्रकट किया है। ''श्रीराधा'' शब्द में अन्तर्निहित भाव को ''त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः'' (पुरुषसूक्त) में व्यक्त किया है। राधा-माधव का श्रीप्रकाशरूप त्रिपाद् दिव्य नित्य वृन्दावन में विद्यमान रहता है तथा एक पाद लीलारूप में मथुरा, व्रज, निकुञ्ज

आदि स्थानों में प्रकट होता है। श्रीराधामाधव युगल का विश्वातीत स्वरूप अगम्य अगोचर है। यह नवधा भक्ति की उत्कृष्ट अवस्था में अनुभूति का विषय बनता है अथवा तन्त्र योग की परम अवस्था में परावाक् या सहस्रार में अनुभूयमान होता है। श्रीयुगल का विश्वमय स्वरूप राधा-माधव-रूप भक्तों के भाव के अनुसार ऐश्वर्य भाव से मथुरा लीला में, सखाभाव से व्रजलीला में या सखिभाव से निकुञ्ज लीला में प्रकट होता है। जगदुरुजी ने इसी भाव को श्रीराधाष्टकस्तोत्र के प्रथम श्लोक में प्रकट किया है--

श्रीराधां राधिकां वन्दे कुञ्जकुञ्जेषु शोभिताम्।
व्रजन्तीं सह कृष्णेन, व्रज-वृन्दावने शुभाम्।।

'श्रीराधा' को आह्लादिनी शक्ति, पराचित्शक्ति कहा है। आह्लादिनी शक्ति आनन्दरूप है।

पराचिच्छक्तिगान्धर्वाम्नाता वेदेषु गोपिका।
ह्लादिनी वैष्णवे तन्त्रे महालक्ष्मीरिति क्वचित्।।

यह आह्लादिनी शक्ति श्रीराधा ही पुरुष रूप श्रीकृष्ण स्वरूप में प्रकट होती है। अतः यह सर्वेश्वरी एवं सर्वेश्वर है। यह भाव अष्टक के द्वितीय एवं चतुर्थ श्लोक में प्रकट हुआ है।

आचार्यश्री ने श्रीराधामाधव युगल को रसिकजनों से समाराध्य एवं भावुकों से प्रपूजित कहा है। श्रीराधातापनी में कहा गया है कि राधा और श्रीकृष्ण रस के सागर हैं, एक देह रूप हैं, क्रीडन के लिए दो रूपों में प्रकट हुए हैं। परमतत्त्व रसरूप ही है उसे प्राप्त करके ही रसिकजन आनन्दित होते हैं। रसिकजन अपने दान-व्रत-तप-होम-जप-स्वाध्याय संयम एवं श्रेय आदि से प्रेमा

भक्ति में लीन होकर श्रीराधामाधव की ही समाराधना करते हैं। वे अपने स्वार्थों का परित्याग करके केवल प्रेमास्पद श्रीराधामाधव युगल के सुख में एकमात्र सुख मानते हैं। वे समस्त अन्य प्रकार की साधना एवं उससे प्राप्त होने वाले फल से रहित होकर अपने मन, वाणी और शरीर के समस्त व्यापारों को श्रीयुगल के सुख के लिए समर्पित कर देते हैं और युगल रस में आनन्दित रहते हैं। रसिकजनों के लिए अन्य कुछ भी प्राप्तव्य शेष नहीं रहता है वे तो केवल श्रीयुगल में निश्चल और निश्छल भक्ति चाहते हैं। भावुकजन ऐश्वर्य, सखा एवं सखिभाव में अधिरूढ होकर श्रीयुगल की पूजा करते हैं। श्रीराधा तो वृषभानुजा होने के कारण साधकों की कामनाओं की पूर्ति भी करती है। यतः वृषभ कामनाओं की पूर्ति करने वाला शब्दराशि वेद है उसी में अर्थरूप से श्रीराधाजी प्रकट हुई है।

आकर्षण करने वाले कृष्ण के साथ विचरण करने वाली कृष्ण सहचरी श्रीराधा करुणापूर्ण है। उन्हीं की कृपा से कृष्णतत्त्व को जाना जा सकता है। श्रीराधाष्टक में श्रीराधा को 'कृष्णहृदम्बुजा' एवं देवेन्द्रादि के लिए अगम्य कहा है। ब्रह्मवैवर्तपुराण में भी कहा गया है कि श्रीराधा के चरण कमल ब्रह्मा आदि के लिए भी सुदुर्लभ हैं, गोपजनों ने तो स्वप्न में भी उनके चरण कमलों का दर्शन नहीं किया है क्योंकि वह श्रीहरि के हृदय में निवास करती हैं। सन्तों, रसिकों एवं साधकों के लिए वह सुलभ है--

मानिनीं राधिकां सन्तः सेवन्ते नित्यशः सदा।
सुलभं यत्पदाम्भोजं ब्रह्मादीनां सुदुर्लभम्।।

स्वप्ने राधापदाम्भोजं नहि पश्यन्ति बल्लभाः।
स्वयं देवी हरेः क्रोडे छायारूपेणकामिनी।।

प्रकृति खण्ड ४८/५२-५४

श्रीराधाजी अनन्तस्वरूपा, दिव्यगुणोपेता एवं परब्रह्म प्रेमस्वरूपा है। श्रीकृष्णयामल में श्रीराधाजी का वचन है कि--

हे समस्त शक्तियों! सुनो। मुझसे श्रेष्ठ न कोई प्रकृति है और न कोई पुरुष। मैं ही श्यामस्वरूप परब्रह्म पुरुष हूँ और मैं ही परमाशक्ति त्रिपुरसुन्दरी हूँ, मैं आनन्दस्वरूप सूक्ष्म ज्योति हूँ, कृष्ण रसरूप है। मैं श्रीकृष्ण के हृदय में स्थित परमशक्ति हूँ। मैं सर्वतन्त्र स्वतन्त्र हूँ। अन्य स्थान पर कहा गया है कि मथुरा में देवकी, पाताल में परमेश्वरी, चित्रकूट में सीता, विन्ध्य में विन्ध्यवासिनी, द्वारका में रुक्मिणी और वृन्दावन में राधा मैं ही हूँ। श्रुतिशास्त्रों में कहीं अभिधा से तो कहीं व्यञ्जना (अनया राधितो नूनम्) से श्रीराधा का ही कीर्तन है--

''उच्चारितां हृदा कीरैः श्रुतिशास्त्रै र्भजे वराम्'' इस श्लोक में महाराजश्री ने इन समस्त भावों को प्रकट किया है। महाराजश्री का यह वैशिष्ट्य है कि गागर में सागर भर देते हैं।

''श्रीकृष्णस्तव'' में श्रीयुगल के दिव्य ज्योति स्वरूप श्रीकृष्णतत्त्व का स्तवन किया है। श्रीकृष्ण सनातन पूर्ण ब्रह्म सर्वेश्वर हैं। वे लीला भाव से सनातन पूर्णब्रह्म द्विभुज रूप में मथुरा में प्रकट होते हैं। भगवान् की ऐश्वर्यलीला, व्रजभाव लीला एवं सखिभाव की निकुञ्जलीला रूप से अनेक लीलाएँ है। किन्तु आद्य श्रीनिम्बार्काचार्यजी की परम्परा में निकुञ्जलीला ही प्रमुख होने से

भक्ति में लीन होकर श्रीराधामाधव की ही समाराधना करते हैं। वे अपने स्वार्थों का परित्याग करके केवल प्रेमास्पद श्रीराधामाधव युगल के सुख में एकमात्र सुख मानते हैं। वे समस्त अन्य प्रकार की साधना एवं उससे प्राप्त होने वाले फल से रहित होकर अपने मन, वाणी और शरीर के समस्त व्यापारों को श्रीयुगल के सुख के लिए समर्पित कर देते हैं और युगल रस में आनन्दित रहते हैं। रसिकजनों के लिए अन्य कुछ भी प्राप्तव्य शेष नहीं रहता है वे तो केवल श्रीयुगल में निश्चल और निश्छल भक्ति चाहते हैं। भावुकजन ऐश्वर्य, सखा एवं सखिभाव में अधिरूढ होकर श्रीयुगल की पूजा करते हैं। श्रीराधा तो वृषभानुजा होने के कारण साधकों की कामनाओं की पूर्ति भी करती है। यतः वृषभ कामनाओं की पूर्ति करने वाला शब्दराशि वेद है उसी में अर्थरूप से श्रीराधाजी प्रकट हुई है।

आकर्षण करने वाले कृष्ण के साथ विचरण करने वाली कृष्ण सहचरी श्रीराधा करुणापूर्ण है। उन्हीं की कृपा से कृष्णतत्त्व को जाना जा सकता है। श्रीराधाष्टक में श्रीराधा को 'कृष्णहृदम्बुजा' एवं देवेन्द्रादि के लिए अगम्य कहा है। ब्रह्मवैवर्तपुराण में भी कहा गया है कि श्रीराधा के चरण कमल ब्रह्मा आदि के लिए भी सुदुर्लभ हैं, गोपजनों ने तो स्वप्न में भी उनके चरण कमलों का दर्शन नहीं किया है क्योंकि वह श्रीहरि के हृदय में निवास करती हैं। सन्तों, रसिकों एवं साधकों के लिए वह सुलभ है--

मानिनीं राधिकां सन्तः सेवन्ते नित्यशः सदा।
सुलभं यत्पदाम्भोजं ब्रह्मादीनां सुदुर्लभम्।।

स्वप्ने राधापदाम्भोजं नहि पश्यन्ति बल्लभाः।
स्वयं देवी हरेः क्रोडे छायारूपेणकामिनी।।

प्रकृति खण्ड ४८/५२-५४

श्रीराधाजी अनन्तस्वरूपा, दिव्यगुणोपेता एवं परब्रह्म प्रेमस्वरूपा है। श्रीकृष्णयामल में श्रीराधाजी का वचन है कि--

हे समस्त शक्तियों! सुनो। मुझसे श्रेष्ठ न कोई प्रकृति है और न कोई पुरुष। मैं ही श्यामस्वरूप परब्रह्म पुरुष हूँ और मैं ही परमाशक्ति त्रिपुरसुन्दरी हूँ, मैं आनन्दस्वरूप सूक्ष्म ज्योति हूँ, कृष्ण रसरूप है। मैं श्रीकृष्ण के हृदय में स्थित परमशक्ति हूँ। मैं सर्वतन्त्र स्वतन्त्र हूँ। अन्य स्थान पर कहा गया है कि मथुरा में देवकी, पाताल में परमेश्वरी, चित्रकूट में सीता, विन्ध्य में विन्ध्यवासिनी, द्वारका में रुक्मिणी और वृन्दावन में राधा मैं ही हूँ। श्रुतिशास्त्रों में कहीं अभिधा से तो कहीं व्यञ्जना (अनया राधितो नूनम्) से श्रीराधा का ही कीर्तन है--

''उच्चारितां हृदा कीरैः श्रुतिशास्त्रै र्भजे वराम्'' इस श्लोक में महाराजश्री ने इन समस्त भावों को प्रकट किया है। महाराजश्री का यह वैशिष्ट्य है कि गागर में सागर भर देते हैं।

''श्रीकृष्णस्तव'' में श्रीयुगल के दिव्य ज्योति स्वरूप श्रीकृष्णतत्त्व का स्तवन किया है। श्रीकृष्ण सनातन पूर्ण ब्रह्म सर्वेश्वर हैं। वे लीला भाव से सनातन पूर्णब्रह्म द्विभुज रूप में मथुरा में प्रकट होते हैं। भगवान् की ऐश्वर्यलीला, व्रजभाव लीला एवं सखिभाव की निकुञ्जलीला रूप से अनेक लीलाएँ है। किन्तु आद्य श्रीनिम्बार्काचार्यजी की परम्परा में निकुञ्जलीला ही प्रमुख होने से

उपास्य रही। इस लीला में ब्रह्मा आदि से समाराधित, श्रुति में सम्यक् प्रकार से गाए गए, ऋषि-मुनियों के आराध्य परब्रह्म कृष्णरूप में कालिन्दी के तट पर निकुञ्ज में परम आराध्या श्रीराधा के साथ रहः केलियों में निमग्न रहते हैं। निम्बार्क परम्परा के साधक सखी भाव से निकुञ्ज में प्रवेश करके लीला का दर्शन करते हैं। श्रीराधा और कृष्ण के भिन्न-भिन्न स्तवन के पश्चात् महाराजश्री ने 'युगल' का स्तवन किया है जो अद्भुत है।

महाराजश्री का ज्ञान, कर्म और उपासना क्रम दिव्य एवं पवित्र है। आपश्री की पुण्यवाणी से हम अपने को पवित्र करें।

आचार्यश्री का कृपाकांक्षी-

दि. २३/३/२०१५ ई.

डॉ. दूलीचन्द शर्मा
प्राचार्य
श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय
निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद, पुष्करक्षेत्र, जि. अजमेर (राज.)

संस्कृत साधना का मूर्तस्वरूप पूज्य आचार्यश्री

इदमन्धस्तमं कृत्स्नं जायते भुवनत्रयम्।
यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते।।

महाकवि दण्डी के काव्यादर्श में वर्णित इस श्लोक के अनुसार समस्त संसार को शब्द ही प्रकाशित करता है। यह शक्ति नहीं होती तो तीनों लोक सम्पूर्ण अन्धकार से समाच्छादित रहते। शास्त्रीय वचनों को अस्वीकार करके सामान्यतः हम व्यवहार मात्र को देखकर यह जान सकते हैं कि लोक में शब्दमात्र की महत्ता कितनी अपूर्व है। समस्त जीव जगत् स्वानुकूल भाषा में निबद्ध है। फलस्वरूप वे सब सृष्टिगत दुःख सुखानुभूति प्रकट करने में समर्थ हैं। यह मनुष्यमात्र को और भी वैशिष्ट्य प्रदान करता है। हम यह कह सकते हैं कि वाणी ही वह विधा है जिससे मनुष्य सामान्य प्राणी से स्वयं को पृथक् परिचिह्नित करता है।

यह वक्तृत्व कुशलता मनुष्य को समस्त प्राणियों में उत्कृष्ट सिद्ध करती है और मनुष्य शास्त्रकृत नियमानुशासन से परिमार्जित होकर तप्त कांचन सम निर्मल बनाता है। सांसारिक व्यसनों से सर्वथा मुक्त होकर जीवन यथार्थ उद्देश्योन्मुख बनकर उसी ओर प्रवृत्त होता है, जहाँ से उसका बिछुडना हुआ था। वाणी की आराधना से ही भगवदाराधना सरलता से सम्भव है। यही माध्यम है उस दिव्य विभूति की अनुभूति करने के लिये। साक्षात्कार यदि भगवान् श्रीसर्वेश्वर राधामाधव प्रभु का करना है तो अविलम्ब वाणी की आराधना करनी होगी।

हम इस आराधना को और सहज बना सकते हैं, स्वयं

को वाणीसिद्ध गुरुचरणों में पूर्णतः समर्पित करते हुये। सिद्ध वचनों का समाश्रय ही सारे संशय का निवारण करता है। संशयशून्य हृदयाकाश में भगवत्स्वरूप की मंगलमयी छवि स्वतः परिलक्षित होती है। स्वाभाविक श्रद्धायुक्त भक्ति द्वारा जीवन परम मंगलमय बन जाता है। गुरु की कृपा ही भगवत्साक्षात्कृति का एकमात्र सदुपाय है।

वर्तमान समय में ऐसे वाणीसिद्ध आचार्यों की पंक्ति में नक्षत्र मध्य पूर्णचन्द्र जैसे अनन्त श्रीविभूषित **जगद्गुरु निम्बार्काचार्य** श्री ''श्रीजी'' महाराजश्री सुशोभित हैं। ''**यद् यदाचरति श्रेष्ठस्तत्त-देवेतरो जनः, स यत् प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।।**'' इस श्रीमद्भग-वद्गीतोपदेश में भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र श्रीमुख निःसृत वाणी को पूर्ण चरितार्थ करते हुये पूज्य आचार्यश्रीचरणों की सत्प्रेरणा सत्संकल्प से सनातन धर्म जगत् सर्वथा पल्लवित एवं पुष्पित हो रहा है।

आपके द्वारा किये जा रहे संस्कृत साधना से ही सनातन परम्परा इस धराधाम में अक्षुण्ण प्रवाहित हो रही है। मेरी इस भावना का यह आशय कदापि न लिया जाय कि पूज्य आचार्यश्री एकमात्र संस्कृत भाषा की संरक्षा में मात्र निबद्ध हैं, वस्तुतः संस्कृत मूल है, ''छिन्ने मूले नैव शाखा न पत्रम्'' मूल की संरक्षा परमावश्यक है, ''संस्कृतिः संस्कृताश्रया'' हमारी भारतीय संस्कृति सम्पूर्ण संस्कृताश्रित है, एतदर्थ ''एकै साधे सब सधे'' प्रातः स्मरणीय पूज्य आचार्यश्रीचरणों की यह उदात्त भावना स्तोत्र, पदसंगीत, उद्गार, उपदेश शतक, काव्य, महाकाव्य, विविध स्वरूप में संस्कृत, हिन्दी, व्रजभाषादि में त्रिविध साधना भगवद्भक्ति-

रससंपृक्त, पावनी गंगानिर्झरिणी बनकर अस्मत् सदृश संसारसगर पुत्रों का समुद्धार करने के लिये प्रवाहित होती रहती है।

पूज्य आचार्यश्री संस्कृत साधना के प्रत्यक्ष मूर्तस्वरूप हैं। आपके इस अपूर्व साधना के लिये अभी कुछ समय पूर्व ही भारत के राष्ट्रपति महोदय ने राष्ट्रपति सम्मान पुरस्कार प्रदान कर अभिवन्दन किया। भारत-भारती-वैभवम्, भारतकल्पतरु, श्रीराधामाधव-रसविलास, गोशतकम्, श्रीयुगलशतकम्, श्रीस्तवरत्नाञ्जलिः, उद्गारशतकम्, प्रेरणाशतकम्, श्रीसर्वेश्वर सुधा बिन्दु सदृश महत्वपूर्ण कृतियाँ सनातन धर्मावलम्बी भक्तवृन्दों को भगवत्शरणागति का मार्ग सर्वदा प्रशस्त करते रहेंगे।

अभी-अभी सद्य विरचित ''स्तवोपासना'' जिसमें श्रीराधाष्टक, श्रीकृष्णस्तव एवं श्रीराधाकृष्णाष्टक द्वारा पूज्य आचार्यश्रीचरणों ने भगवान् श्रीराधासर्वेश्वर प्रभु की महिमा का गुणगान किया है। यह ''स्तवोपासना'' हम सबके लिये परम श्रेयस्कर है।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज की सत्प्रेरणा शुभाशीर्वचन इसी प्रकार अविरल स्वरूप से हम हबको प्राप्त होता रहे। भगवान् श्रीराधामाधव प्रभु के युगलचरणारविन्दों में मेरी यही मुहुर्मुहुः अभ्यर्थना है।

विनीत-**मुकुन्दशरण उपाध्याय, व्याकरणाचार्य**
प्रधानाध्यापक-राज. प्रवे. संस्कृत विद्यालय, घसवों की ढाणी सुरसुरा जि. अजमेर (राज.)
स्थायी पता-तिलोत्तमा नगरपालिका वडा नं. १८ जिला-रूपन्देही लुम्बिनी अंचल, (नेपाल)
दि. २३/३/२०१५ ई.

श्रीराधाकृष्ण युगलरसोपासना

नित्य श्रीराधाकृष्णयुगलचरणारविन्द-मकरन्द सुधालीन अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री ''श्रीजी'' महाराज के द्वारा लोकोपकारार्थ अनेक रचनाओं का प्रादुर्भाव हुआ है। इन रचनाओं ने अनादि वैदिक सनातन धर्म एवं उपासनीय तत्त्व के परम रहस्यमय सिद्धान्त में जहाँ मूर्धन्य विद्वान् भी प्रवेश करने में असमर्थ रहते हैं, वहाँ सरल साधारण श्रद्धालुजनों को बोधगम्य बनाकर कृतार्थ किया है। प्रस्तुत ''स्तवोपासना'' युग्मस्तोत्र आद्यजगद्गुरु श्रीसुदर्शनचक्रावतार भगवन्निम्बार्काचार्य द्वारा प्रतिपादित स्वाभाविक द्वैताद्वैत सिद्धान्त के अन्तर्गत उपास्यस्वरूप के अनुसार श्रीराधाकृष्ण युगल छवि का मनोहारी वर्णन है।

भगवन्निम्बार्काचार्य ने उपास्यस्वरूप का निरूपण करते हुए कहा है--

स्वभावतोऽपास्तसमस्तदोषमशेषकल्याणगुणैकराशिम्।
व्यूहाङ्गिनं ब्रह्म परं वरेण्यं ध्यायेम कृष्णं कमलेक्षणं हरिम्।।
अङ्गे तु वामे वृषभानुजां मुदा विराजमानामनुरूपसौभगाम्।
सखीसहस्रैः परिसेवितां सदा स्मरेम देवीं सकलेष्टकामदाम्।।

जिस ब्रह्म को वेद एक एवं अनेक प्रकार का बताते हैं, जिनकी स्मृतियों में नाना प्रकार से स्तुति की गई है वही परमतत्त्व श्रीराधाकृष्ण युगलस्वरूप हैं। विग्रह दो होते हुये भी इनमें स्वाभाविक भेदाभेद सम्बन्ध है। स्त्री-पुरुष चिह्न श्याम-गौर वर्ण आदि इनके परस्पर भेद के परिणाम हैं एवं समान गुणधर्म अभेद के लक्षण हैं।

श्रुतियाँ ब्रह्म के समान किसी अन्य का अस्तित्व निषेध करती हैं। जैसे--

न तस्य कार्यं करणं च विद्यते न तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते।
परास्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते स्वाभाविकी ज्ञानबलक्रिया च।।

उस ब्रह्म को न तो कुछ करने की आवश्यकता है और न ही उसके कर्म करने के लिए इन्द्रियादि साधन ही विद्यमान हैं। उसके समान भी कोई दूसरा नहीं देखा गया है तो फिर अधिक की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती। उसकी पराशक्ति अनेक प्रकार की सुनी गई है। ऐसे ब्रह्म में ज्ञान, बल, क्रिया आदि सभी स्वाभाविक रूप से विद्यमान हैं।

भक्ति सर्वांग रसमयी है। रस का अवतरण ललित मधुर लीलाओं से ही होता है। इसलिए रसिक भक्तजन नित्यलीलाविहारी युगलस्वरूप का ही चिन्तन करते हैं। वेदों में जहाँ ब्रह्म को निर्गुण, निराकार, इन्द्रियरहित आदि बताया गया है वह मात्र प्राकृत अथवा उत्पत्ति विनाशशील आकार आदि के लिए है। वस्तुतः सम्पूर्ण गुणों के सागर भगवान् में परमानन्दमय स्वाभाविक दोषरहित अनन्त गुण हैं जिनका मुक्तकाम अनन्य रसिक भक्त नित्य सेवन करते हैं। सगुण तथा निर्गुण ब्रह्म के स्वरूप को बताने वाली श्रुतियों में परस्पर विरोध का परिहार करते हुए श्रीकृष्णस्तवराज में इस प्रकार बताया गया है--

निर्गुणं तदिति वैदिकं वचोऽविद्यया त्वयि विशेषणासहे।
वस्तुतोऽखिलविशेषसागरे नो विरुद्धमिति तावदस्तु मे।।

भगवान् की अनन्त लीलाओं में निकुञ्जलीला अन्यतम है। नित्यनिकुञ्जविहारी भगवान् निकुञ्ज में श्रीराधाकृष्ण युगलस्वरूप

में विराजमान रहते हैं। वेदों की समस्त ऋचाएँ एवं उज्वल भक्तियुक्त प्रेमस्वरूप मुक्त अनन्त जीव प्रियाप्रियतम की सेवा में सखीस्वरूप में उपस्थित रहते हैं। भगवान् को वेदों में ''आत्माराम'' कहा गया है। इसका अर्थ होता है आत्मा में रमण करने वाला। श्रीराधा श्रीकृष्ण में रमण करती हैं और श्रीकृष्ण श्रीराधा में रमण करते हैं। दोनों एक दूसरे में रमण करते हुए इतने तन्मय हो जाते हैं कि भगवान् श्यामसुन्दर गौरवर्ण के हो जाते हैं और श्रीराधा श्यामवर्ण की हो जाती हैं। इसी कारण भगवान् के अनन्य युगलरसोपासक भक्त श्रीराधा को ''श्यामा'' इस नाम से भी पुकारते हैं।

परमपूज्य श्रीआचार्यचरणों ने प्रस्तुत तीन स्तवों के द्वारा मानो त्रिविध ब्रह्म तत्त्व का सुमधुर बिम्ब स्थापित किया। अथवा श्रीराधाकृष्ण युगलस्वरूप में भगवन्निम्बार्काचार्य द्वारा प्रतिपादित जो स्वाभाविक द्वैताद्वैत सम्बन्ध है उसका आपश्री ने सचित्र दर्शन कराया है। युगलस्वरूप के भिन्न दर्शन के लिए ''श्रीराधाष्टकम्'' एवं ''श्रीकृष्णस्तवः'' ये दो स्तव हैं और ''श्रीराधाकृष्णाष्टकं स्तोत्रम्'' के द्वारा दोनों में अभेद दर्शन प्राप्त हो रहे हैं। इस कलिकाल में वेदान्त के निगूढ भावों को समझ पाना अत्यन्त कठिन है। परन्तु अकारण ही करुणा जिनका स्वभाव है ऐसे प्रातःस्मरणीय श्रीआचार्यचरणों के द्वारा सर्वजनहिताय यह स्तवरत्न प्रदान हुआ है जिसका अनुशीलन कर समस्त रसिक भक्तजन अवश्यमेव भगवत्कृपा का अनुभव प्राप्त करेंगे।

नेपालवास्तव्य श्रीचरणरजसेवक-**हरिमोहन उपाध्याय**

प्राध्यापक-श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय, निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद

पुष्करक्षेत्र, किशनगढ, अजमेर (राजस्थान)

स्वकीयोद्गार

अनन्तकरुणासिन्धु सर्वेश्वर श्रीराधासमाधव प्रभु जब अपनी अहैतुकी कृपाकादम्बिनी का अभिवर्षण करते हैं, तभी इस दुर्लभ मानव जीवन में कुछ उत्तम कार्य सम्पादित हो जाता है, उसीके फलस्वरूप ''श्रीराधाष्टक स्तोत्र'' रसिक भक्तजनों के समक्ष प्रस्तुत है। परमाह्लादिनी नित्यनिकुञ्जेश्वरी वृन्दावनाधीश्वरी श्रीराधाप्रिया का सौन्दर्य-लावण्य-कारुण्य-सौकुमार्य-सौशील्य का परिवर्णन सर्वथा अशक्य है। इन कृष्णाह्लादिनी नित्यनवकिशोरी श्रीराधाप्रिया की महिमा ही अपार है। ऋषि-मुनि-देववृन्दों द्वारा जिनके स्वरूप वर्णन करने का अतिदुर्लभ कार्य है। श्रुति-स्मृति-पुराणादि शास्त्र ''नेति नेति'' वर्णन कर मौन धारण कर लेते हैं।

आद्याचार्य सुदर्शनायुधावतार श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य ने अपने स्वप्रणीत ''वेदान्तकामधेनु-दशश्लोकी'' के नवम श्लोक से जो परिवर्णन किया है वह निश्चय ही अनुशीलनीय है, यथा ''कृपास्यदैन्यादियुजि प्रजायते'' अर्थात् अतिदीन भरित होकर उन कृपामयी सर्वेश्वरी श्रीराधाप्रिया की तन्मयता पूर्वक आराधना

करे, तभी उनके दिव्यकृपाकण की प्राप्ति हो सके। वस्तुतः उनका लोकोत्तर स्वरूप ही एवंविध है, जिसे महापुरुषों द्वारा भी अवबोध होना अति कठिन है। इसी दृष्टि से यह ''श्रीराधाष्टक-स्तोत्र'' एवं ''श्रीकृष्णस्तव'' तथा ''श्रीराधाकृष्णाष्टक'' एवं ''श्रीयुग्मपञ्चश्लोकी'' समक्ष में है जिसे रसिकजन इनका अनुशीलन कर परम लाभान्वित हों। यह अति लघु कलेवर रूप ''श्रीस्तवोपासना'' इसी भाव से यहाँ प्रस्तुत की गयी है।

--श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

शुभमिति-चैत्र शु. ४ सोमवार
वि. सं. २०७२ दिनांक २३/३/२०१५

।। श्रीराधाष्टक - स्तोत्रम् ।।

श्रीराधां राधिकां वन्दे, कुञ्ज-कुञ्जेषु-शोभिताम्।
व्रजन्तीं सह कृष्णेन, व्रज-वृन्दावने शुभाम्।।१।।

व्रजस्थ वृन्दावन धाम में श्रीसर्वेश्वर श्रीकृष्ण भगवान् के साथ पधारती हुई परम सुशोभित एवं कुञ्ज-निकुञ्जों में नित्य निकुञ्जेश्वरी श्रीराधिकाजी की अभिवन्दना करते हैं।।१।।

दिव्य-सौन्दर्य-सम्पन्नां, भजेऽहं मनसा सदा।
राधिकां करुणापूर्णां, सर्वेश्वरीञ्च सौभगाम्।।२।।

परम दिव्य सुन्दरता की स्वरूप एवं करुणामयी सर्वेश्वरी श्रीराधाप्रिया को अपने मन से उनकी सुभगता का सदा भजन करते हैं।।२।।

कृष्णहृदम्बुजां राधां, स्मरामि सततं हृदा।
रसिकैश्च समाराध्यां, भावुकैश्च प्रपूजिताम्।।३।।

अनन्य रसिकजनों के द्वारा समाराधित एवं परम भावुक जनों से समर्चित तथा अनन्तकोटि लावण्य वृन्दावनाधीश्वरी सर्वेश्वर श्रीकृष्ण भगवान् के अन्तर्मानस में विराजित परम लावण्यमयी श्रीनित्यनवकिशोरी का अपने अन्तर्मानस में निरन्तर स्मरण करते हैं।।३।।

परमानन्दरूपां च, भजेऽहं वृषभानुजाम्।

सखिवृन्दैश्च संसेव्यां, श्रीराधां व्रजवल्लभाम्।।४।।

अपनी सखीवृन्दों के द्वारा परिसेवित परमानन्द स्वरूप श्रीवृषभानुजा व्रजवल्लभा रासेश्वरी श्रीराधा का हम मनसा-वाचा-कर्मणा भजन-स्मरण करते हैं।।४।१

कदलीचारु-कुञ्जेषु, राजितां राधिकां प्रियाम्।
देवेन्द्राद्यैः सदाऽगम्यां, भजेऽहं परमां शुभाम्।।५।।

कदली अर्थात् केला की सुन्दर कुञ्जों में विराजित एवं विधि-शिव-इन्द्रादि सुरवृन्दों द्वारा जिनके स्वरूप का अवबोध अतीव दुष्कर है, ऐसी अतीव शोभायमान श्रीराधाप्रिया का भजन करते हैं।।५।।

सनकाद्यैः सदाराध्यां, गीतां गन्धर्वकिन्नरैः।
कुञ्जेश्वरीं भजे राधां, विपिने च सुसेविताम्।।६।।

श्रीसनक सनन्दन सनातन सनतकुमारों द्वारा समाराधित एवं गन्धर्व किन्नर आदि देवों द्वारा जिनके अनन्त गुण गणों का गान किया जाता है और श्रीवृन्दावन की नित्यनिकुञ्ज में सुशोभित नव कुञ्जेश्वरी श्रीराधा का भजन ध्यान करते हैं।।६।।

कोकिला-सारिका-नादैः सुस्मितां राधिकां भजे।
निम्ब-कुञ्जे स्थितां राधां, दिव्यकान्तियुतां प्रियाम्।।७।।

निम्ब (नीम) तरुवरों की सुभग कुञ्जों में विराजमान तथा शुक-पिक-सारिका (कोयल-तोता-मैना) आदि के सुन्दर निनाद से अति प्रमुदित तथा दिव्यशोभासमन्वित श्रीराधाप्रिया

का भजन अनुस्मरण करते हैं।।७।।

उच्चारितां हृदा कीरैः, श्रुतिशास्त्रैर्भजे वराम्।
दिव्यगुणान्वितां राधां, व्रजजनैश्च भाविताम्।।८।।

श्रुति-तन्त्र-पुराणादि शास्त्रों द्वारा जिनके सुभग स्वरूप का वर्णन किया जाता है, एवं व्रजवासीजनों द्वारा अपने अन्तर्मानस में जिनके स्वरूप का ध्यान किया जाता है। कीर अर्थात् तोता आदि पक्षिगणों के द्वारा अपने अन्तर्हृदय से गान किया जाता है, ऐसी परम दिव्य गुणगणों से समन्वित रासेश्वरी सर्वेश्वरी श्रीराधाप्रिया का प्रतिपल भजन करते हैं।।८।।

राधाष्टकञ्च सत्स्तोत्रं, युग्मभक्तिप्रदायकम्।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम्।।६।।

श्रीराधामाधव भगवान् की अनन्य भक्ति प्रदायक यह राधाष्टक स्तोत्र उन्हीं आराध्य के कृपाजन्य प्रस्तुत है।।६।।

।। श्रीकृष्णस्तवः ।।

कृष्णं सर्वेश्वरं वन्दे पूर्णं ब्रह्म सनातनम्।
वृन्दावनेश्वरं ज्ञेयं सखिवृन्दैश्च सेवितम्।।१।।

सखिजनों के द्वारा परिसेवित पूर्णब्रह्म जो सनातन हैं ऐसे सर्वेश्वर वृन्दावनेश्वर श्रीकृष्ण भगवान् के स्वरूप को जानना चाहिए। ऐसे उन प्रभु की हम अभिवन्दना करते हैं।।१।।

कदम्ब-मञ्जु-कुञ्जेषु कालिन्दीतट-संस्थितम्।
राधया सह गोविन्दं नमामि व्रजजीवनम्।।२।।

कदम्ब की सुन्दर कुञ्जों में एवं श्रीयमुनाजी के पावन तटीय प्रदेश में विराजमान व्रज के एकमात्र सुशोभित गोविन्द भगवान् श्रीकृष्ण को अभिनमन करते हैं।।२।।

केशेन्द्रादि सदाराध्यं श्रुति-कदम्बसंस्तुतम्।
ऋषि-मुनीश्वराद्यैश्च समाराध्यं भजे हरिम्।।३।।

ब्रह्मा-शंकर-इन्द्रादि देवों द्वारा निरन्तर आराधित एवं श्रुति मन्त्रों द्वारा जिनकी स्तुति की जाती है एवं ऋषि-मुनिजनों द्वारा जिनकी उपासना भी की जाती है, ऐसे हरि स्वरूप श्रीकृष्ण भगवान् का स्मरण भजन करते हैं।।३।।

व्रजालि-मानसे नित्यं शोभितं श्यामसुन्दरम्।
माधुर्य-करुणापूर्णं स्मरामि सततं हृदा।।४।।

व्रज गोपीजनों द्वारा अपने अन्तर्मानस में सदा सर्वदा

सुशोभित एवं मधुरता करुणा के सागर श्यामसुन्दर भगवान् श्रीकृष्ण का अपने हृदय से अनवरत स्मरण करते हैं।।४।।

सौरि-सकाश-कुञ्जेषु व्रजन्तं राधया सह।
कोकिला-सारिका-नादै-हर्षितं माधवं भजे।।५।।

यमुना के समीप कुञ्जों में सर्वेश्वरी प्रिया श्रीराधा के साथ पधारते हुए तथा कोयल-मैना के सुन्दर स्वर के श्रवण से अति हर्षित माधवरूप श्रीकृष्ण भगवान् का भजन करते हैं।।५।।

गोवृन्दपृष्ठभागे च गच्छन्तं कृष्णमीश्वरम्।
गोपवृन्दैः सदा सार्द्धं स्मरन्तं राधिकां भजे।।६।।

गोमाताओं के पीछे-पीछे अपने गोपगणों के साथ सर्वेश्वरी श्रीराधिकाजी का स्मरण करते हुए परमेश्वर श्रीकृष्ण भगवान् का भजन करते हैं।।६।।

सतां संगीतशास्त्रैश्च प्रगीतं माधवं भजे।
अतीवकरुणापूर्णं विद्वद्भिः समुपासितम्।।७।।

विविध विद्वानों के द्वारा उपासित किये गये परम करुणा सागर तथा सन्तों के संगीत शास्त्र से प्रगीयमान माधव स्वरूप श्रीकृष्ण भगवान् का भजन करते हैं।।७।।

क्वणन्तं मुरलीवाद्यमतीवमधुरं प्रियम्।
भजेऽहं नित्यशः स्वान्ते श्रीकृष्णं राधया सह।।८।।

अत्यन्त मधुर एवं प्रिय मुरली वाद्य को बजाते हुए नित्य नवकिशोरी रासेश्वरी श्रीराधिकाजी के संग सुशोभित श्रीकृष्ण

भगवान् को अपने अन्तःकरण से प्रतिपल हम भजन करते हैं।।८।।

कृष्णस्तवः सुधापूर्णः पराभक्तिप्रदायकः।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितः।।

श्रीकृष्ण भगवान् की पराभक्ति को प्रदान करने वाला अमृतरूप श्रीकृष्णस्तव सर्वेश्वर श्रीकृष्ण भगवान् की कृपा से प्रस्तुत है।।९।।

श्रीराधाकृष्णाष्टकं-स्तोत्रम्

राधाकृष्णं सदा वन्दे वृन्दावनविहारिणम्।
मधुरतासुधासिन्धुं दीनबन्धुं दयाकरम्।।१।।

मधुरता के सुधा सागर दया करने वाले जो दीनबन्धु हैं ऐसे वृन्दावनविहारी श्रीराधाकृष्ण भगवान् की सदा सर्वदा अभिवन्दना करते हैं।।१।।

सौरिकूलसुकुञ्जेषु विहरन्तं हृदा भजे।
वकुल-कदली कुञ्जे राधाकृष्ण-विराजितम्।।२।।

यमुना के सुन्दर तट पर सुभग कुञ्जों में विहार करते हुए और मोरछली केला की कुञ्ज में विराजित श्रीराधाकृष्ण भगवान् का अपने हृदय से भजन करते हैं।।२।।

सखीवृन्दै-र्मुदाराध्यं पुष्पमाला सुशोभितम्।
स्मरामि राधिकाकृष्णं भक्तवांछाप्रदायकम्।।३।।

भक्तों के उत्तम मनोरथ को प्रदान करने वाले सहचरी जनों से परम सुन्दर आराध्यमान पुष्पमाला से सुशोभित श्रीराधाकृष्ण भगवान् का स्मरण करते हैं।।३।।

सुरवृन्दैः सदा सेव्यं राधाकृष्णं नमाम्यहम्।
अनन्यरसिकै-र्ध्येयं जगद्वीजं व्रजाधिपम्।।४।।

अनन्य रसिकों के द्वारा ध्यान किये जाने वाले और देवगणों के द्वारा सदा परिसेवित एवं इस सम्पूर्ण जगत् के

एकमात्र कारण व्रजेश्वर श्रीराधाकृष्ण भगवान् को हम अभिनमन करते हैं।।४।।

श्रुतिमन्त्रैः समाराध्यं गीयमानं सुधीजनैः।
राधाकृष्णं प्रभाते च प्रणमामि कृपास्पदम्।।५।।

वेदमन्त्रों से आराध्यमान एवं विद्वद्जनों द्वारा जिनका गुणगान होता है, ऐसे परम कृपालु श्रीराधाकृष्ण भगवान् को प्रभात वेला में प्रणाम करते हैं।।५।।

सुभगं राधिकाकृष्णं किशोरवयसंयुतम्।
असीमकरुणागारं नमामि जगदीश्वरम्।।६।।

चराचरात्मक समस्त जगत् के एकमात्र सर्वेश्वर तथा परमकरुणावरुणालय एवं किशोर अवस्था सम्पन्न और अतीव सुन्दर श्रीराधाकृष्ण भगवान् को नमन करते हैं।।६।।

जम्बू-रसालकुञ्जेषु राधाकृष्ण सुशोभितम्।
मुनीन्द्रादि गिरागीतं प्रणमामि पुनः पुनः।।७।।

जामुन-आम की कुञ्जों में सुशोभित तथा ऋषि-मुनियों की वाणी द्वारा जिनका गान किया जाता है, ऐसे श्रीराधाकृष्ण भगवान् को बारम्बार प्रणाम समर्पित करते हैं।।७।।

भक्तैश्च भावनालभ्यं गुणज्ञैः परिकीर्तितम्।
राधाकृष्णं रसाधारं वन्दे प्रणतिपूर्वकम्।।८।।

अनन्य भक्तों की भावना से लभ्यमान एवं प्रभु के गुणगणों को जानने वाले गुणीजनों द्वारा जिनका संकीर्तन किया

जाता है, ऐसे आनन्द के परमाधार श्रीराधाकृष्ण भगवान् को साष्टाङ्ग प्रणाम पूर्वक वन्दन करते हैं।।८।।

राधाकृष्णाष्टकं स्तोत्रं युग्माऽङ्घ्रि भक्तिसम्प्रदम्।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम्।।६।।

श्रीराधाकृष्ण भगवान् के चरण कमलों की भक्ति को देने वाला यह राधाकृष्णाष्टक स्तोत्र उन्हीं की कृपा से यहाँ प्रस्तुत है।।६।।

श्रीयुग्मपञ्चश्लोकी

श्रीकुञ्जमध्ये परिगम्यमाणं वृन्दावने दिव्यधरासुशोभम्।
सखीगणैश्चारु सुसेव्यमानं राधामुकुन्दं प्रणमामि नित्यम्।।१।।

वृन्दावन की दिव्य अवनी पर अतिशय सुशोभित श्रीकुञ्ज के मध्य पधारते हुए एवं सखी सहचरी आदि के द्वारा भली प्रकार से सेवित है ऐसे भगवान् श्रीराधामुकुन्द को प्रतिदिन प्रणाम करते हैं।।१।।

आनन्दकेन्द्रं व्रजगोपपूज्यं गोवृन्दपृष्ठे मुरलीधरञ्च।
अशेषदेवैः समुपासनीयं राधामुकुन्दं प्रणमामि नित्यम्।।२।।

आनन्द के एकमात्र अधिष्ठान व्रजस्थ गोपसमूहों से पूजित तथा अगणित गोमाताओं के पीछे-पीछे पधारते हुए मुरली को धारण किये हुए असंख्य देवों के द्वारा जिनकी उपासना की जाती है ऐसे श्रीराधामुकुन्द भगवान् को अहर्निश प्रणाम करते हैं।।२।।

मुनीन्द्रवृन्दैरभिवन्दनीयं कदम्बकुञ्जाङ्गणराजमानम्।
पुराण-तन्त्रागमचारुवर्ण्यं राधामुकुन्दं प्रणमामि नित्यम्।।३।।

ऋषि-मुनियों के द्वारा जिनकी वन्दना की जाती है जो कदम्ब कुञ्ज के प्राङ्गण में विराजमान एवं पुराण तन्त्रादि के द्वारा जिनका वर्णन किया जाता है एवंविध श्रीराधामुकुन्द भगवान् को नित्यशः प्रणाम समर्पित करते हैं।।३।।

कलिन्दजाकूलविहारशीलमशेषकल्याणगुणैकसिन्धुम्।
वेणुक्कणन्तं व्रजवल्लभञ्च राधामुकुन्दं प्रणमामि नित्यम्।।४।।

श्रीयमुनाजी के तट पर विहार करते हुये तथा अनन्त कल्याण गुणगणसागर एवं वंशी को बजाते हुये व्रजवल्लभ श्रीराधा-मुकुन्द भगवान् को प्रतिपल प्रणाम करते हैं।।४।।

मायूरपिच्छच्छविशोभमानं श्रीरासलीलानरिनृत्यमाणम्।
सखीसमूहैरभिवन्दनीयं राधामुकुन्दं प्रणमामि नित्यम्।।५।।

सुन्दर मोर पंख से सुशोभित एवं श्रीरासलीला में सुन्दर नृत्य करते हुये सखीवृन्दों के द्वारा जिनकी वन्दना की जाती है ऐसे श्रीराधामुकुन्द भगवान् को अनेकशः प्रणाम करते हैं।।५।।

श्रीयुग्मपञ्चकश्लोकी श्रीयुग्मभक्तिसम्प्रदा।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मिता।।६।।

श्रीराधाकृष्ण भगवान् की यह पञ्चश्लोकी जो उन्हीं की पराभक्ति को देने वाली तथा उन्हीं की कृपा के द्वारा प्रणति पूर्वक प्रस्तुत हैं।।५।।

*

श्रीयुग्मदोहावली

(१)

राधा-राधा जो रटै, उसका जीवन धन्य।
ऐसे भगवद्भक्त ही, ''शरण'' सदैव अनन्य।।

(२)

श्रीराधासर्वेश्वरी, जो गावत निशिवार।
उसका जीवन सफल है, ''शरण'' भक्ति संचार।।

(३)

राधामाधव दरश शुभ, करो सदा हिय ध्यान।
सखी-सहेली संग है, ''शरण'' परम हितमान।।

(४)

व्रजगोपी व्रजकुञ्ज में, राधा करत विहार।
अतिशय अनुपम दरश है, ''शरण'' हृदय अवधार।।

(५)

कुञ्ज-कुञ्ज में राधिका, नाद करत पिक-कीर।
राधा-राधा भणत नित, ''शरण'' मधुप प्रिय भीर।।

(६)

माधव मञ्जुल रूप है, दरश चलो हिय धार।
तदैव जीवन धन्य है, ''शरण'' भक्ति संचार।।

(७)

कदम्ब कुञ्ज लतावली, झूलत श्यामाश्याम।
सखीवृन्द भी संग है, ''शरण'' झुलावत धाम।।

(८)

वृन्दावन हरिधाम है, जहाँ सुशोभित श्याम।
भावुकजन अति तल्लीन, ''शरण'' परम अविराम।।

(९)

सौरि सुन्दर प्रतीर है, भ्रमर करत गुञ्जार।
कदली कुञ्ज निकुञ्ज में, ''शरण'' निनाद अपार।।

(१०)

चलिये सब कुछ छांडिके, वृन्दावन व्रजधाम।
जहाँ विराजत युगलवर, ''शरण'' प्रणति अविराम।।

(११)

जय-जय बोलो राधिके, जय-जय श्रीघनश्याम।
तभी तो जीवन धन्यतम, ''शरण'' भजो तज काम।।

(१२)

सत्य-सनातन धर्म है, उसका हो प्रतिपाल।
यही परमोत्तम धर्म है, ''शरण'' विहारीलाल।।

(१३)

गो-सेवा शुभ कार्य है, यही तो पावन कर्म।
सकल मनुज कर्तव्य है, ''शरण'' शास्त्र का मर्म।।

(१४)

जीवन को हरि भजन में, जो सेवत वह विज्ञ।
जन-जन में हो यह भाव, ''शरण'' तदैव अभिज्ञ।।

(१५)

पक्षी-सेवा नित्य हो, उसका हो परिपाल।
यही सुमानव कार्य है, ''शरण'' प्रभू रखवाल।।

(१६)

मधुर-मधुर हरिनाम रट, सदा रहित अभिमान।
कृपामयी वृषभानुजा, ''शरण'' करेगी ध्यान।।

(१७)

राधामाधव श्रीप्रभू, कुञ्ज विराजत आप।
दरशन अनुपम दिव्य है, ''शरण'' स्वकान्तर जाप।।

(१८)

सनकादि सेवित सदा, सर्वेश्वर भगवान।
भक्ति परायण भक्त पर, ''शरण'' कृपा हिय मान।

(१९)

सतत भजो श्रीराधिका, सर्वेश्वर गुण गान।
तदैव जीवन सफल है, ''शरण'' मनुज कल्यान।।

(२०)

मनुज जीवन तभी मिलै, प्रभू कृपा जब होय।
यही वैदिक विधान है, ''शरण'' सुपातक धोय।।

(२१)

द्वैताद्वैत सिद्धान्त है, वह स्वाभाविक रूप।
निम्बार्क भगवान का, ''शरण'' शास्त्र अनुरूप।।

(२२)

रसेश्वर सेवा साधना, श्रीवृन्दावन वास।
व्रजरज की महिमा सदा, ''शरण'' करो अभिलास।।

(२३)

सकल शास्त्र का सार यह, भजले राधेश्याम।
इनकी गरिमा अपार है, ''शरण'' पदाब्ज प्रणाम।।

(२४)

दुर्लभ मनुज शरीर है, भजहु सदा हरिनाम।
परम दयामय श्रीमाधव, ''शरण'' वरण व्रजधाम।।

(२५)

अतुलित महिमा कृष्ण की, दरश शान्ति संचार।
संग सुशोभित राधिका, ''शरण'' सखी न्योछार।।

(२६)

कृष्ण-कृष्ण कहते चलो, मङ्गल-मञ्जुल रूप।
मुदित सदा वृषभानुजा, ''शरण'' प्रिया अनुरूप।।

(२७)

प्रिया राधिका कुञ्ज में, अष्टसखी सह धार।
पहिन चले श्रीकृष्ण प्रभु, ''शरण'' सुमन शुभ हार।।

(२८)

हरिकीर्तन होता जहाँ, वहीं सुशोभित श्याम।
राधासर्वेश्वरशरण, सदा रहो व्रजधाम।।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज द्वारा विरचित-

❊ ग्रन्थमाला ❊

१. प्रातःस्तवराज
२. श्रीयुगलगीतिशतकम्
३. उपदेश - दर्शन
४. श्रीसर्वेश्वर-सुधा-बिन्दु
५. श्रीस्तवरत्नाञ्जलिः
६. श्रीराधामाधवशतकम्
७. श्रीनिकुञ्ज-सौरभम्
८. हिन्दु-संघटन
९. भारत-भारती-वैभवम्
१०. श्रीयुगलस्तवविंशतिः
११. श्रीजानकीवल्लभस्तवः
१२. श्रीहनुमन्महिमाष्टकम्
१३. श्रीनिम्बार्कगोपीजनवल्लभाष्टकम्
१४. भारत कल्पतरु
१५. श्रीनिम्बार्कस्तवार्चनम्
१६. विवेक-वल्ली
१७. नवनीतसुधा
१८. श्रीसर्वेश्वरशतकम्
१९. श्रीराधाशतकम्
२०. श्रीनिम्बार्कचरितम्
२१. श्रीवृन्दावनसौरभम्
२२. श्रीराधासर्वेश्वरमंजरी
२३. श्रीमाधवप्रपन्नाष्टकम्
२४. छात्र-विवेक-दर्शन
२५. भारत-वीर-गौरव
२६. श्रीराधासर्वेश्वरालोकः
२७. परशुराम-स्तवावली
२८. श्रीराधा-राधना
२९. मन्त्रराजभावार्थ-दीपिका
३०. आचार्यपञ्चायतनस्तवनम्
३१. श्रीराधामाधवरसविलास
३२. गोशतकम्
३३. श्रीसीतारामस्तवादर्शः
३४. स्तवमल्लिका
३५. श्रीरामस्तवावली
३६. श्रीमाधवशरणापत्तिस्तोत्रम्
३७. दिव्यचरितप्रभा
३८. प्रेरणाशतकम्
३९. उद्गारशतकम्
४०. श्रीपीताम्बरदशश्लोकी
४०. श्रीयुगलस्तवल्ली
४२. श्रीस्तवाराधना
४३. श्रीनिम्बार्कवेदान्ततत्त्वदर्शिका
४४. श्रीस्तवोपासना

मैं भारत का राष्ट्रपति

प्रणब मुखर्जी

जगद्गुरुनिम्बार्काचार्य श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज

को

संस्कृत में निपुणता तथा शास्त्र में पाण्डित्य के लिए
यह प्रमाण-पत्र प्रदान करता हूँ।

अहं भारतस्य राष्ट्रपतिः

प्रणब मुखर्जी

जगद्गुरुनिम्बार्काचार्यः श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यः श्री "श्रीजी" महाराजः
इत्यस्मै

संस्कृतवाङ्मये नैपुण्याय शास्त्रे च पाण्डित्याय
प्रमाणपत्रमेतत् प्रददामि।

प्रणब मुखर्जी
राष्ट्रपति

नई दिल्ली
दिनांक - 23 मार्च, 2015
2 चैत्र, 1937 शक
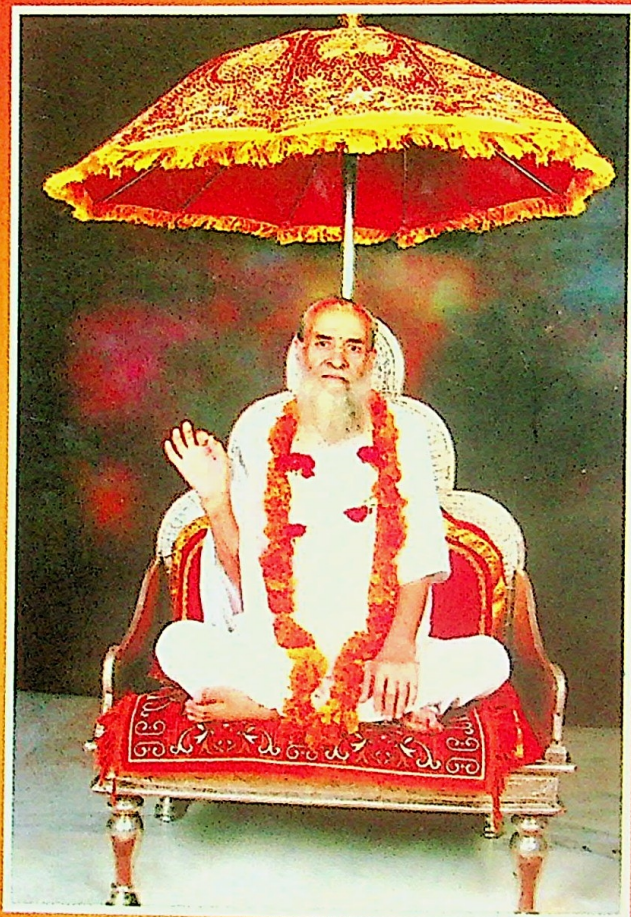
श्रीमन्निखिलमहीमण्डलाचार्य, चक्र-चूड़ामणि, सर्वतन्त्र - स्वतन्त्र, द्वैताद्वैतप्रवर्तक, यतिपतिदिनेश, राजराजेन्द्रसमभ्यर्चितचरणकमल, भगवन्निम्बार्काचार्यपीठविराजित, अनन्तानन्त श्रीविभूषित

जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य
श्री "श्रीजी" महाराज

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ -सलेमाबाद